Name of Cadet: CPL Disha Purohit
(GJ19SWA441305)

NCC Unit & Address: 2CTC
Behind BVM Engg College,
Near Dhobighat,
Mota Bazaar,
Vallabh Vidyanagar,
Anand,
Gujarat 388120

Academic Institute/ Department Name & Address:
Department of Food Processing Technology,
A.D.Patel Institute of Technology(ADIT)
Behind GIDC,
New Vallabh Vidhyanagar,
Anand,
Gujarat 388121

Article Topic: **धन की कमी गरीबी नहीं है।**

Language: Hindi

Cadet Details: email: disha_purohit@yahoo.com
Mo. :7016441543

Sign:

धन की कमी गरीबी नहीं है

गरीबी सिर्फ संपत्ति का अभाव नहीं है। विपुल संपत्ति के बावजूद अगर कोई व्यक्ति वैचारिक दारिद्र्य से ग्रस्त हैं, तो क्या हम उनको संपन्न मान सकेंगे ? गरीबी को व्याख्यायित करने हेतु कुछ पहलुओं पर एक नजर डालते हैं।

गरीबी की अवधारणा क्या है ? क्या होनी चाहिए ? गरीब और धनवान में क्या अंतर होता है ? महान राजनीतिज्ञ एवं विद्वान अर्थशास्त्री कौटिल्य द्वारा दिए गए अत्यंत सरल निर्देश अनुसार, आदर्श अर्थव्यवस्था वही है जिस में समाज के सबसे गरीब व्यक्ति की संपत्ति से पचास गुना ज्यादा संपत्ति
सबसे धनी व्यक्ति के पास हो, इससे ज्यादा संपत्ति अगर है तो इसे तंदुरुस्त अर्थव्यवस्था नहीं कह सकते। इस संदर्भ से हम देखें तो वर्तमान वैश्विक परिदृश्य क्या है ? सबसे गरीब व्यक्ति की संपत्ति और सब से धनी व्यक्ति की संपत्ति में पांच हजार गुना, पांच लाख गुना या शायद इससे भी ज्यादा अंतर होगा। ऐसी असंतुलित असमानता की स्थिति में गरीबी की परिभाषा संपत्ति के आंकड़ों की मायाजाल से ही प्रभावित रहती है।

एक सर्वसामान्य वैश्विक मापदंड के अनुसार जिसके पास खुद की कमाई से रोटी, कपड़ा और मकान (यानी कि जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएं) उपलब्ध है, वह गरीब नहीं है। इतनी चीजें सुलभ है और व्यक्ति इससे संतुष्ट है तो हम उसे गरीब नहीं कह सकते।

निरंतर बढ़ रही सुविधाओं (जिसको कभी-कभी सुख मान लेने की गलती हो जाती है) में से कुछ सुविधाओं का उपभोग अगर धन के अभाव की वजह से नहीं कर पाए तो क्या उसे हम गरीबी कहेंगे ? सरल जीवन से संतुष्ट रहना, खुश रहना यह भी समृद्धि का एक प्रका रही है।

इस संदर्भ में भूतान जैसे गरीब एवं अविकसित माने जाने वाले देश ने बहुत ही अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। Happiness Index (आनंद सूचकांक) में वह पूरे विश्व में सबसे आगे है। दूसरी और अत्यंत विकसित, एवं प्रथम विश्व मैं स्थित माने जाने वाले कई राष्ट्रों की आम जनता विभिन्न विकराल मानसिक समस्याओं का सामना कर रही है। इससे सूचित होता है कि सिर्फ संपत्ति के अभाव को गरीबी नहीं कह सकते।

इसका यह मतलब कतई नहीं कि संपत्ति के अभाव का महिमामंडन हो। समाज का जीवनस्तर बढ़ाने में, राष्ट्र को उन्नतिशील बनाने में संपत्ति की विपुलता ही प्राथमिक आवश्यकता है। लेकिन संपत्ति का दीर्घ-दृष्टि हीन उपार्जन घोर विडंबनाएं खड़ी करता है। नैतिकता एवं जीवनमूल्यों के पतन को आमंत्रित करता है।

व्यक्तिगत तौर पर गौर करनेवाला एक पहलू है आत्मविश्वास। इस विषय में अनगिनत प्रेरक प्रवचनकारों (motivational speakers) द्वारा प्रस्तुत असीम सामग्री, विविध माध्यमों के ऊपर मौजूद है। सभी का संक्षिप्त निष्कर्ष यही होता है कि आत्मविश्वास जैसी पूंजी आप के पास अगर है तो धन का अभाव मायने नहीं रखता, तो आप गरीब नहीं है। स्वयं के लिए तनिक सा भी हीनभाव अगर रहता है तो आप गरीब हो।

सिर्फ संपत्ति की कमी को गरीबी नहीं कहते। अपने स्थान से ऊपर उठने की वृत्ति का अभाव भी एक तरह की गरीबी ही है। लक्ष्यहीन जीवन भी गरीबी है। अपने सामर्थ्य का पूर्ण उपयोग न करना, यह भी गरीबी का ही लक्षण है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि न होना भी गरीबी ही है ।शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही भी गरीबी है।

व्यक्ति अपनी अध्ययनशिलता निरंतर बढ़ाने हेतु जागृत रहता है तो किसी भी तरह की गरीबी उसे परेशान नहीं कर सकती। अपने विचारों के स्वातंत्र्य के लिए सजग रहना अमीरी है, मानसिक दासता गरीबी है। निरर्थक गुमान और सार्थक गौरव के बीच में फर्क नहीं कर पाना गरीबी है। प्रगतिशील परिवर्तन के लिए तत्पर नहीं रहना गरीबी है।

प्राचीन भारतीय शास्त्रों के अनुसार लक्ष्मी के आठ प्रकार होते हैं, जिसे अष्टलक्ष्मी कहते हैं। जिनमें से धन सिर्फ एक प्रकार है। ज्ञान अर्जित करने हेतु आपमें उत्सुकता रहती हैं, तो आप गरीब नहीं है। ज्यादा से ज्यादा लोगों के साथ आपके ऊष्माभरे संबंध है तो आप गरीब नहीं है। प्रकृति के प्रति आपका दृष्टिकोण अगर संवेदनशील है तो आप गरीब नहीं है। समस्त मानवसमूह को अगर आप समदृष्टि से देखने की क्षमता रखते हैं तो आप गरीब नहीं है।

-CPL दिशा पुरोहित

(GJ19SWA441305)

2CTC NCC

VALLABH VIDHYANAGAR,
ANAND.